<u>कृषि महाविद्यालय, इन्दौर</u>

कृषि शिक्षा दिवस पर आयोजित कार्यकम का प्रतिवेदन

आज दिनांक 3 दिसम्बर 2020 कृषि महाविद्यालय, इन्दौर द्वारा कोविड–19 के गाईड लाईन का पालन करते हुऐ कृषि शिक्षा दिवस विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया । इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. एस.व्ही. साई प्रसाद, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान सस्थांन क्षेत्रीय गेंहू अनुसंधान केन्द्र इन्दौर एवं डॉ. सुनिल दत्त बिल्लोरे, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इन्दौर के साथ प्रोफेसर एस.के.राव, माननीय कुलपति महोदय, एवं डॉ. दीपक हरी रानडे, अधिष्ठाता कृषि संकाय राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, भी सम्मिलित हुये ।

कार्यक्रम में कृषि महाविद्यालय इन्दौर के समस्त कक्षाओं के छात्र/छात्राऐं, राष्ट्रीय सेवा योजना के सभी वालन्टयर, तथा रावे प्रोग्राम में सम्मिलित सभी छात्र/छात्राओं के साथ इन्दौर के सेन्ट पॉल हायर सेकण्डरी स्कल, सेन्ट रेफियल्स हायर सेकण्डरी स्कुल, केन्द्रीय विद्यालय, सन्मती स्कुल के छात्र/छात्राओं ने वेबिनार में सहभागिता की ।

कृषि शिक्षा दिवस पर डॉ. साई प्रसाद द्वारा कृषि शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला गया उन्हाने बताया कि कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान के कारण ही देश में कृषि का उत्पादन बढ़ा है। उत्पादन बढ़ाने में देश के किसानों एवं खेतीहर श्रमिको का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कृषि शिक्षा में अन्य क्षेत्रों कि अपेक्षा रोजगार की अपार संभावना है, देश के लगभग 80,000 हजार विद्यार्थी विभिन्न कृषि विश्व विद्यालयों से अध्यनरत है। यह विद्यार्थी शासकीय नौकरी के साथ ही कृणि से जुडे अन्य व्यवसाय जैसे पशुपालन, बकरी पालन, मुर्गी पालन एवं कृषि से जुडे हुये अन्य कृषि आधारित उद्योगों में रोजगार प्राप्त कर सकते है।

भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक सुनिल दत्त बिल्लोरे ने बताया कि देश की अर्थव्यवस्था कृषि के उपर निर्भर है। देश में लगभग 60 प्रतिशत लोग कृषि एवं कृषि व्यवसाय से जुडे है। उन्होने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के स्थापना से

लेकर विभिन्न अनुसंधान परियोजनाऐं, कृषि विश्व विद्यालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापन की जानकारी दी जो देश में कृणि उत्पादन एवं रोजगार बढ़ाने में योगदान दे रहे है।

डॉ. बिल्लोरे ने बताया देश में कृणि के विभिन्न क्षेत्रों में विकास हेतु लगभग 16 कांतिया जैसे हरित क्रान्ती, मीठी क्रांती, सफेद क्रांती, निली क्रांती आदि की जानकारी दी ।

डॉ. रानडे, अधिष्ठाता कृषि संकाय द्वारा सर्वप्रथम सभी मुख्य वक्ताओं को धन्यवाद दिया एवं कहा कि कृषि में रोजगार की अपार संभावनाऐं ह आप नेता, किसान, अभिनता, अधिकारी , कृषि पत्रकारिता आदि में अपना कार्यक्षेत्र चुन सकते है। डॉ. रानडे द्वारा सबसे महत्वपूर्ण बात यह कही गई कि कृषि शिक्षा में पारंगत छात्रों को देश में कृषि एवं कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिये कार्य करना चाहिये । उनके द्वारा राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर एवं डलहौजी विश्वविद्यालय, कनाड़ा के साथ छात्रों को कृषि शिक्षा में उच्च अध्ययन करने हेतु अनुबंध (एम.ओ.यु.) करने की जानकारी भी दी गई ।

इस अवसर पर कृषि शिक्षा के विभिन्न विषयों पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें **कृषि क्षेत्र में रोजगार की संभावनाए**, **वर्तमान परिपेक्ष में कृषि शिक्षा का महत्व, एवं नई शिक्षा नीति का कृषि क्षेत्र में योगदान** सम्मिलित रहे । महाविद्यालय के छात्र छात्राओं ने बढ़चढ़कर भाग लिया । प्रतियोगिता में भाग लेने वाले छात्र/छात्राओं को प्रोत्साहन स्वरूप प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र छात्राओं को 26 जनवरी को सम्नानित कर प्रमाण–पत्र वितरित किये जायेगे ।

छात्राओं से प्राप्त निबंधों /आलेखों का मूल्यांकन श्रीमती डॉ. दिप्ति गुप्ता हिन्दी साहित्य विशेषज्ञ द्वारा किया गया

अतं में कषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. अशोक कृष्णा द्वारा सभी प्रमुख वक्ताओं , विश्वविद्यालय प्रशासन, प्राध्यापको, स्कुल प्राचार्यो तथा सम्मिलित सभी छात्र/छात्राओं का धन्यवाद देकर आभार माना गया ।